08/04/2020
B.A. Hons

7.

'भल हर भल हरि' महाकवि विद्यापति

"भल हर भल हरि भल तुअ कला
खने पित बसन खनहि बघछला।"

शब्दार्थ :- हर - महादेव, हरि - विष्णु, खने - क्षणे, भल - नीक
पित - पीअर, बसन - वस्त्र, बघछला - बाघकछाल।

अर्थ :- एहि पदमे शिव ओ विष्णुक युगलमूर्ति हरिहरक स्तुति कयल गेल अछि।
कवि कहैत छथि जे जय हो शिव! जय हो विष्णु! अहाँक जीवन-कलाक जय हो।
कारण जे - क्षणेमे अहाँ पीअरवस्त्र पहीरि लैत छीतँ क्षणेमे बघम्बरकेर धारण करैत छी।

"खन पञ्चानन खन भुज चारि
खन सङ्कर खन देव मुरारि।"

शब्दार्थ :- खन - क्षण, पञ्चानन - पाँच आननबला अर्थात् शिव,
भुज - हाथ, सङ्कर - शंकर, मुरारि - विष्णु।

अर्थ :- क्षणमे पाँच आननबला अर्थात शिवकेर रूपमे उपस्थित होइत छी तँ क्षणेमे चारि हाथबला चतुर्भुज बनि समक्ष होइत छी।
क्षणमे शंकर बनि दर्शन दैत छी तँ अगिले क्षण विष्णु भगवान बनि ठाढ़ होइत छी।

⇒ "खन गोकुल भए चराइअ गाए
खन भिखि माङिगअ डमरु बजाए।"

शब्दार्थ :– खन – क्षण, गोकुल – नन्दक गाम।

अर्थ :– क्षणमे गोकुलवासी बनि गायकेँ चरबए लगैत छी तँ अगिले क्षण डमरु बजा-बजा भीख माङए लगैत छी।

⇒ "खन गोविन्द भए लिअ महदान
खनहि भसम भरु काँख बोकान।"

शब्दार्थ :– गोविन्द – वामन रूप, महदान – महादान
भसम – भस्म, बोकान – झोरा।

अर्थ :– क्षणमे गोविन्द [विष्णुक पाँचम अवतार 'वामन', जे त्रेता युगकेर पहिल अवतार छलाह। राजा बलि, जनिका दानवीर होएबाक गर्व छलनि, हुनकर गर्वकेँ तोड़बाक हेतु वामन अवतार लए राजासँ मात्र तीन डेग केर भिक्षा मङलनि। राजाक अहिमे राजासँ पाबि पहिल डेगमे सम्पूर्ण पृथ्वी, दोसर डेगमे अकास आ तेसर डेग हेतु राजा सिर टेकलनि, राजाक गर्व भंग भए चुकल छलनि आ ओ वामन रूप धारी विष्णुकेँ चीन्हि गेलाह। तेसर डेग हेतु अपन माथ आगाँ कए देलखिन। एही दानकेँ महादान कहल जाइछ] रूपमे महादान प्राप्त करैत छी तँ अगिले क्षण काँखमे लटकैत झोड़ामे भस्म भरैत छी।

⇒ "एक सरीर लेल दुइ बास
खन बैकुण्ठ खन कैलास।"

⇒

शब्दार्थ :- सरीर - शरीर , बास - रहबाक स्थान
बैकुण्ठ - विष्णुक बासस्थान , कैलास - महादेवक बासस्थान।

कविवर कहैत छथि - शरीर तँ मात्र एक अछि, मुदा दू भिन्न रूपमे दू भिन्न ठाम रहैत छी। कखनो विष्णु बनि बैकुण्ठमे वास करैत छी तँ कखनो महादेव रूपमे कैलास पर्वत पर रहैत छी।

⇒ "भनइ विद्यापति विपरित बानि
ओ नारायन ओ सुलपानि।"

शब्दार्थ :- भनइ - कहैत छथि , बानि - ढँग , स्वरूप,
नारायन - कृष्ण/विष्णु , सुलपानि - त्रिशूलधारण करनिहार अर्थात् शिव।

अर्थ :- विद्यापति कहैत छथि जे ई सर्वथा विपरित स्वरूप अछि अर्थात् ईश्वर एक छथि, मुदा दू रूपमे रहैत छथि - एक नारायन अर्थात् विष्णुक रूपमे तँ दोसर सुलपानि अर्थात् शिव रूपमे।

Presented by
Dr. AJIT MISHRA
Dept. of MAITHILI
M.L.S. College
Sarisab Pahi
Madhubani.